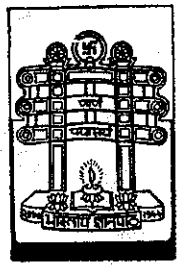

भारतीय ज्ञानपीठ

उद्देश्य

ज्ञान की विलुप्त, अनुपलब्ध
और अप्रकाशित सामग्री का
अनुसन्धान और प्रकाशन
तथा लोक - हितकारी
मौलिक-साहित्य का निर्माण

●

संस्थापक
श्री शान्तिप्रसाद जैन

महाकवि अनीस : श्रेष्ठ रचनाएँ

करुणा और दर्द के धनी महाकवि अनीस

श्रेष्ठ रचनाएँ

सम्पादन :
सालेहा आबिद हुसैन

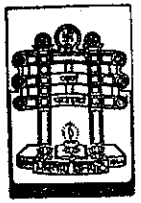

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

करुणा और दर्द के धनी

महाकवि ग्रनोस : श्रेष्ठ रचनाएँ

सम्पादन :
सालेहा ग्राबिद हुसैन

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय,
भारत सरकार की ओर से भेंट,

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

लोकोदय ग्रन्थमाला : ग्रन्थांक ३९४
सम्पादक एवं नियोजक
लक्ष्मीचन्द्र जैन
जगदीश

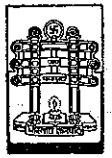

Lokodaya Series : Title No 394
KARUNA AUR DARD KE DHANI
MAHAKAVI ANEES : SHRESHTHA RACHANAYEN
(Urdu Poems)
First Edition 1976
Price Rs 15/-
©

BHARATIYA JNANPITH
B/45-47 Connaught Place
NEW DELHI-110001

करुणा और दर्द के धनी
महाकवि अनीस : श्रेष्ठ रचनाएँ

प्रकाशक
भारतीय ज्ञानपीठ
बी, ४५-४७ कॅनॉट प्लेस, नई दिल्ली

प्रथम संस्करण १९७६

मूल्य १५/-

मुद्रक
ग्रन्थ भारती प्रेस
शाहदरा, दिल्ली-११००३२

KARUNA AUR DARD KE DHANI : MAHAKAVI ANEES :
URDU POEMS : Edited by Saleha Abid Hussain

अ नु क्र म

मीर अनीस के मर्सियों की पृष्ठभूमि ... ... (५)
परिचय ... ...(१२)

१. मर्सिये :
१. या रब चमने-नज़्म को गुलज़ारे-इरम कर १
२. फ़र्ज़न्दे-पयम्बर का मदीने से सफ़र है १५
३. जब क़तआ की मसाफ़ते-शब आफ़ताब ने २९
४. दोज़ख से जो आज़ाद किया हुर को ख़ुदा ने ४७
५. जब हज़रते-ज़ैनब के पिसर मर गये दोनों ६३
६. या रब जहाँ में भाई से भाई जुदा न हो ८१
७. जब ग़ाजियाने-फ़ौजे-ख़ुदा नाम कर गये ९५
८. जब दौलते-सरवर ये ज़वाल आ गया रन में ११५
९. जब नौजवाँ पिसर शहे-दीं से जुदा हुआ १२७
१०. जब ख़ातिमा बख़ैर हुआ फ़ौजे-शाह का १४७
११. ज़िन्दाँ में जब कि आले पयम्बर हुए असीर १५९
१२. दिन गुज़रे बहुत क़ैद में जब अहले-हरम को १७५

२. सलाम १८३
३. रुबाइयाँ १८७

मर्सिया : ३

जब क़त्आ की मसाफ़ते-शब आफ़ताब ने

इश्रे की सुबह और आखिरी
शहीद की मौत का वर्णन

जब क़त्आ[1] की मसाफ़ते-शब आफ़ताब ने
जल्वा[2] किया सहर के रुख़े-बे-हिजाब ने
देखा सुए-फ़लक शहे-गर्दूं रकाब ने
मुड़कर सदा रफ़ीक़ों को दी उस जनाब ने
आख़िर है रात, हम्द-ो[3]-सनाए-ख़ुदा करो
उट्ठो, फ़रीज़ए[4]-सहरी को अदा करो।

हाँ ग़ाज़ियो[5] ये दिन है जदाल-ो[6]-क़ताल का
याँ ख़ूँ बहेगा आज मुहम्मद की आल का
चेहरा ख़ुशी से सुर्ख़ है ज़ोहरा के लाल का
गुज़री शबे-फ़िराक़,[7] दिन आया विसाल[8] का
हम वो हैं ग़म करेंगे मलक[9] जिनके वास्ते
रातें तड़प के काटी हैं इस दिन के वास्ते।

ये सुब्ह है वो सुब्ह, मुबारक है जिसकी शाम
याँ से हुआ जब कूच तो है ख़ुल्द[10] में मुक़ाम
कौसर[11] पे आबरू से पहुँच जायें तश्ना-काम[12]
लिक्खे ख़ुदा नमाज़-गुज़ारों में उनका नाम
सब हैं वहीदे-अस्र,[13] ये गुल चार सू उठे
दुनिया से जो शहीद उठे, सुर्ख़-रू[14] उठे।

ये सुन के बिस्तरों से उठे वो ख़ुदा शनास
एक एक ने ज़ेबे[15]-जिस्म किया फ़ाख़िरा लिबास
शाने[16] महासिनों में किये सब ने बेहिरास
बाँधे अमामे, आये इमामे[17]-ज़माँ के पास
रंगीं अबाएँ दोश[18] पे, कमरें कसे हुए
मुश्क-ो[19]-ज़बाद-ो-इत्र में कपड़े बसे हुए।

तक़रीर में वो रम्ज़-ो[20]-कनाए कि लाजवाब
नुक्ता भी मुँह से गर कोई निकला तो इन्तख़ाब[21]

१. जब सूर्य ने रात की यात्रा पूरी कर ली २. प्रभात ने अपने सौन्दर्य का प्रदर्शन किया ३. ख़ुदा की इबादत ४. सुबह की नमाज़ ५. बहादुरो ६. युद्ध ७. वियोग की रात समाप्त हुई ८. संयोग ९. फ़रिश्ते १०. जन्नत, स्वर्ग ११. जन्नत की नहर १२. प्यासे १३. दुनिया में उन का जवाब नहीं १४. इज़्ज़त से १५. अच्छी पोशाक पहनना १६. सबने बालों में कंघी की १७. इमाम हुसैन १८. कन्धों पर रंगीन लबादे १९. सुगन्धित वस्तुओं के नाम २०. इशारे, संकेत २१. चुना हुआ

गोया दहन[1] किताबे-बलाग़त का एक बाब
सूखी ज़ुबानें शह्दे-फ़साहत[2] से कामयाब
लहजों पे शाइराने-अरब थे मरे हुए
पिसते लबों के, वो कि नमक से भरे हुए।

लब[3] पर हँसी गुलों से ज़ियादा शगुफ़्ता-रू
पैदा तनों से पैरहने-यूसुफ़ी[4] की बू
ग़िलमाँ[5] के दिल में जिनकी ग़ुलामी की आरज़ू
परहेज़गार-ो[6]-ज़ाहिद-ो-अबरार-ो-नेक ख़ू
पत्थर में ऐसे लाल, सदफ़[7] में गुहर नहीं
हूरों का क़ौल था कि मलक हैं बशर नहीं।

पानी न था वज़ू जो करें वो फ़लक जनाब
पर थी रुख़ों पे ख़ाके-तयम्मुम से तुर्फ़ा आब[8]
बारीक अब्र में नज़र आते थे आफ़ताब
होते हैं ख़ाकसार ग़ुलामे-अबू-तराब
महताब से रुख़ों की सफ़ा और हो गयी
मिट्टी से आइनों पे जिला और हो गयी।

ख़ेमे से निकले शह के अज़ीज़ाने-ख़ुश-ख़िसाल
जिनमें कई थे हज़रते-ख़ैरुन्निसा के लाल
क़ासिम सा गुलबदन अली अकबर सा ख़ुश-जमाल
एक जा अक़ील-ो-मुस्लिम-ो-जाफ़र[9] के नौनिहाल
सब के रुख़ों[10] का नूर सिपहरे[11]-बरीं पे था
अट्ठारह आफ़ताबों का ग़ुंचा[12] ज़मीं पे था।

ठण्डी हवा में सब्ज़ए[13]-सहरा की वो लहक
शरमाये जिससे अतलसे[14] ज़ंगारिए-फ़लक
वो झूमना दरख़्तों का फूलों की वो महक
हर बर्गे-गुल पे क़तरए-[15]शब्नम की वो झलक

१. मुँह ऐसा था मानों सुन्दर वाणी की पुस्तक हो २. सुन्दर या मीठी वाणी की ३. होंठों की मुस्कान फूलों से ज़्यादा ताज़गी लिये हुई थी ४. हज़रत यूसुफ़ की पोशाक की सुगन्ध ५. स्वर्ग के सुन्दर लड़के ६. नेक, इबादत करने वाले नेक लोग ७. सीपी ८. चेहरों पर तयम्मुम की मिट्टी ने और चमक पैदा कर दी थी ९. इमाम हुसैन के भाई और चाचा के नाम १०. चेहरों ११. आसमान १२. अठारह सूर्यों का झुरमुट १३. जंगल की हरियाली का लहलहाना १४. आसमान का सुन्दर रंग १५. फूल के हर मुँह पर ओस की बूँदें चमक रही थीं

हीरे ख़जिल[1] थे गौहरे[2]-यकता निसार थे
पत्ते भी हर शजर के जवाहर[3]-निगार थे।
वो नूर और वो दश्त सुहाना सा वो फ़िज़ा
दुर्राज-ने-कुब्क-ने-तीहुवो-ताऊस[4] की सदा
वो जोशे-गुल वो नालए-मुर्गाने[5]-खुशनवा
सर्दी जिगर को बख़्शती थी सुब्ह की हवा
फूलों के सब्ज़ सब्ज़ शजर[6] सुर्ख़-पोश थे
थाले भी नख़्ल के सबदे[7] गुल-फ़रोश थे।
वो दश्त[8] वो नसीम के झोंके वो सब्ज़ाज़ार[9]
फूलों पे जा बजा वो गुहर-हाये-आबदार
उठना वो झूम-झूम के शाख़ों का बार-बार
बालाए[10]-नख़्ल एक जो बुलबुल तो गुल हज़ार
ख़्वाहाँ[11] थे नख़्ले-गुलशने-ज़ोहरा जो आब के
शबनम ने भर दिये थे कटोरे गुलाब के।
काँटों में एक तरफ़ थे रियाज़े[12]-नबी के फूल
ख़ुश्बू से जिन की ख़ुल्द था जंगल का अर्ज़[13]-ने-तूल
दुनिया की ज़ेब-ने-ज़ीनते-काशानए[14]-बतूल
वो बाग़ था, लगा गये थे ख़ुद जिसे रसूल
माहे-अज़ा[15] के अशरए[16]-अव्वल में लुट गया
वो बाग़ियों के हाथ से जंगल में लुट गया।
अल्लाह रे ख़िज़ाँ के दिन इस बाग़ की बहार
फूले समाते थे न मुहम्मद के गुल-अज़ार
दूल्हा बने हुए थे, अजल थी गुलों का हार
जागे वो सारी रात के वो नींद का ख़ुमार
राहें तमाम जिस्म की ख़ुश्बू से बस गयीं
जब मुस्कुराये फूलों की कलियाँ बिकस गयीं।
नागाह चर्ख़[17] पर ख़ते-अबयज़ हुआ अयाँ
तशरीफ़ जानमाज़ पे लाये शहे-जमाँ
सज्जादे[18] बिछ गये अक़ाबे[19] शाहे-इन्स-ने-जाँ
सौते-हसन[20] से अकबरे-महरू ने दी अज़ाँ

१. शर्मिन्दा २. बेमिसाल मोती ३. हीरों से जड़े हुए ४. परिन्दों के नाम ५. सुन्दर गाने वाले परिन्दों का गाना ६. वृक्ष, पेड़ ७. फूल बेचने वाले की टोकरी ८. दरख़्त ९. जंगल की सुबह की हवा के झोंके १०. दरख़्त के ऊपर एक बुलबुल थी तो हज़ार फूल थे ११. पेड़ पानी के इच्छुक थे १२. बाग़ १३. लम्बाई-चौड़ाई १४. महल १५. मुहर्रम का महीना १६. महीने के पहले दस दिन १७. आसमान पर सफ़ेदी छाने लगी १८. जानमाज़ १९. पीछे २०. आवाज़

हर एक की चश्म आँसुओं से डुबडुबा गयी
गोया सदा रसूल की कानों में आ गयी।
नामूसे-शाह रोते थे ख़ेमे में ज़ार-ज़ार
चुपकी खड़ी थी सह्न में बानूए नामदार
ज़ैनब बलाएँ लेके ये कहती थी बार-बार
सदक़े नमाख़ियों के मुअज़्ज़िन[1] के मैं निसार
करते हैं यूँ सना-ओ-सिफ़त जुलजलाल की
लोगो अज़ाँ सुनो मेरे यूसुफ़ जमाल की।
मेरी तरफ़ से कोई बलाएँ तो लेने जाये
ऐनुलकमाल[2] से तुझे बच्चे ख़ुदा बचाये
वो ख़ुश-बयाँ[3] कि जिसकी तलाक़त[4] दिलों को भाये
दो-दो दिन एक बूँद भी पानी की वो न पाये
ग़ुर्बत में पड़ गयी है मुसीबत हुसैन पर
फ़ाका ये तीसरा है मेरे नूरे-ऐन पर।
एक सफ़ में सब मुहम्मद-ने-हैदर के रिश्तेदार
अठ्ठारह नौजवाँ हैं, अगर कीजिये शुमार[5]
पर सब जिगर-फ़िगार-ने हक़ आगाह-ने-ख़ाकसार
पैरौ इमामे-पाक के दानाए[6]-रोज़गार
तसवीह हर तरफ़ तहे-अफ़लाक[7] उन्हीं की है
जिस पर दरूद पढ़ते हैं ये ख़ाक उन्हीं की है।
फ़ारिग़ हुए नमाज़ से जब क़िब्लए अनाम[8]
आये मुसाफ़हे को जवानाने-तश्ना-काम
चूमे किसी ने दस्ते-शहन्शाहे-ख़ास[9]-ने-आम
आँखें मलीं क़दम पे किसी ने ब-एहतराम
क्या दिल थे क्या सिपाहे[10]-रशीदे-ने-सईद थी
बाहम मुआनक़े[11] थे कि मरने की ईद थी।
सजदे में शुक्र कि कोई था मर्दे-बा-ख़ुदा
पढ़ता था कोई हुज़्न से क़ुर्आं कोई दुआ
नाते-नबी कहीं थी, कहीं हम्दे-किब्रिया
मौला उठा के हाथ ये करते थे इल्तिजा

१. अज़ाँ देनेवाला, २. बुरी नज़र ३. सुन्दरवाणी वाला ४. बात का सौन्दर्य ५. गिनती ६. दुनिया में सबसे अक़लमन्द ७. आसमान के नीचे ८. इमाम हुसैन ९. इमाम हुसैन के साथ १०. नेक एवं बहादुर फ़ौज ११. गले मिलना

फ़ाक़ों पे तश्नाकामि-ओ-ग़ुर्बत पे रह्म कर
या रब मुसाफ़िरों की जमाअत पे रह्म कर।

जारी थी इल्तिजा थी मुनाजात थी इधर
वाँ सफ़[1] कशि-ओ-जुल्म-ो-त अद्दी-ओ-शोर-ो-शर
कहता था इब्ने[2]-साद ये जा-जा के नह्र पर
घाटों से होशियार तराई से बा-ख़बर
दो रोज़ से है तश्ना दहानी हुसैन को
हाँ मरते दम भी दीजो न पानी हुसैन को।

बैठे थे जानमाज़ पे शाहे-फ़लक-सरीर
नागाह क़रीब आके गिरे तीन-चार तीर
देखा हर एक ने मुड़के सुए लश्करे-शरीर
अब्बास उठे तोल के शमशीरे-बे-नज़ीर
परवाना थे सिराजे[3]-इमामत के नूर पर
रोकी सिपर हुजूरें[4]-करामत ज़हूर पर।

अकबर से मुड़ के कहने लगे सरवेर[5]-ज़माँ
तुम जा के कह दो ख़ेमे में ये ऐ पिदर की जाँ
बाँधे है सर कशी पे कमर लश्करे-गराँ
बच्चों को ले के सह्न से हट जायें बीवियाँ
गफ़लत में तीर से कोई बच्चा तलफ़[6] न हो
डर है मुझे कि गर्दने-असग़र[7] हदफ़ न हो।

कहते थे ये पिसर से शहे-आसमाँ-सरीर
फ़िज़्ज़ा पुकारी दर से कि ऐ ख़ल्क़[8] के अमीर
हय हय अली की बेटियाँ किस जा हों गोशागीर[9]
असग़र के गाहवारे[10] तक आकर गिरे हैं तीर
गर्मी में सारी रात तो घुट-घुट के रोये हैं
बच्चे अभी तो सर्द हवा पाके सोये हैं।

बाक़र कहीं पड़ा है सकीना कहीं है ग़श
गर्मी की फ़स्ल, ये तब[11]-ो-ताब और ये अतश[12]
रो-रो के सो गये हैं सग़ीराने[13]-माह-वश
बच्चों को ले के याँ से कहाँ जायें फ़ाक़ाकश[14]

१. उधर लड़नेवालों ने जुल्म, सितम और लड़ाई पर कमर कसी थी २. दुश्मन की फ़ौज का सरदार ३-४-५. इमाम हुसैन ६. मर न जाये ७. निशाना ८. दुनिया के अमीर यानी इमाम हुसैन ९. छिपे १०. झूला ११. सख़्त गर्मी १२. प्यास १३. बच्चे १४. फ़ाक़ा करनेवाले

ये किस ख़ता पे तीर पयापै बरस्ते हैं
ठण्डी हवा के वास्ते बच्चे तरस्ते हैं।

उठे ये शोर सुनके इमामे-फ़लक वक़ार
ड्योढ़ी तक आये ढालों को रोके रफ़ीक़-ो-यार
फ़रमाया मुड़ के चलते हैं अब बह्रे[1]-कार ज़ार
कमरें कसो जिहाद[2] पे, मँगवाओ राहवार
देखो फ़ज़ा बहिश्त की दिल बाग़-बाग़ हो
उम्मत के काम से कहीं जल्दी फ़राग़ हो।

फ़रमाके ये हरम में गये शाहे-बह्र-ो बर
होने लगीं सफ़ों में कमरबन्दियाँ इधर
जोशन पहन के हज़रते-अब्बासे-नामवर
दरवाज़े पर टहलने लगे मिस्ले-शेरे-नर
परतौ से रुख़ के बर्क़ चमकती थी ख़ाक पर
तलवार हाथ में थी सिपर दोशे-पाक पर।

ख़ेमे में जाके शह ने ये देखा हरम का हाल
चेहरे तो फ़क़ हैं और खुले हैं सरों के बाल
ज़ैनब की ये दुआ है कि ऐ रब्बे जुलजलाल[3]
बच जाये इस फ़िसाद से ख़ैरुन्निसा का लाल
बानूए नेक नाम की खेती हरी रहे
सन्दल से माँग, बच्चों से गोदी भरी रहे।

आफ़त में है मुसाफ़िरे-सहराए-करबला
बेकस पे ये चढ़ाई है सय्यद पे ये जफ़ा
ग़ुर्बत[4] में ठन गयी जो लड़ाई तो होगा क्या
इन नन्हे-नन्हे बच्चों पे कर रह्म ऐ ख़ुदा
फ़ाक़ों से जाँ-ब-लब हैं अतश[5] से हलाक हैं
या रब तेरे रसूल की हम आले-पाक हैं।

बोले क़रीब जाके शहे-आसमाँ जनाब
मुज़तर[6] न हो, दुआएँ हैं तुम सब की मुस्तजाब[7]
मग़रूर हैं, ख़ता पे हैं, ये ख़ानुमाँ ख़राब
ख़ुद जाके मैं दिखाता हूँ उन को रहे-सवाब[8]

१. लड़ाई के लिए २. वह लड़ाई जो ख़ुदा की राह में लड़ी जाये ३. ऊँची से ऊँची शान वाले ख़ुदा ४. मुसाफ़िरी में ५. प्यास से ६. परेशान ७. क़ुबूल, स्वीकार ८. सीधा रास्ता

मौक़ा बहन नहीं अभी फ़रयाद-ने-आह का
लाओ तबर्रुकात[1] रिसालत-पनाह का।
मेराज[2] में रसूल ने पहना था जो लिबास
कश्ती में लायीं ज़ैनब उसे शाहे-दीं के पास
सर पर रखा अमामए-सरदारे-हक़[3] शनास
पहनी क़बाए - पाके - रसूले - फ़लक - असास
बर[4] में दुरुस्त-ने-चुस्त था जामा रसूल का
रूमाल फ़ातमा का, अमामा रसूल का।
पोशाक सब पहन चुके जिस दम शहे-ज़मन
लेकर बलाएँ भाई की रोने लगी बहन
चिल्लायी हाय! आज नहीं हैदर-ने-हसन
अम्माँ कहाँ से लाये तुम्हें अब ये बे-वतन
रुख़्सत है अब रसूल के यूसुफ़ जमाल की
सदक़े गयी बलाएँ तो लो अपने लाल की।
सन्दूक़ अस्लहा[5] के जो खुलवाये शाह ने
पीटा मुँह अपना ज़ैनबे-इस्मत पनाह ने
पहनी ज़िराह इमामे-फ़लक बारगाह ने
बाज़ू[6] पे जोशनी जो पढ़े इज़्ज़ो जाह ने
जौहर बदन के हुस्न से सारे चमक गये
हलक़े थे जितने इतने सितारे चमक गये।
हथियार इधर लगा चुके आक़ाए-ख़ास-ने आम
तैयार उधर हुआ अलमे[7]-सय्यदे-अनाम
खोले सरों को गिर्द थीं सैदानियाँ तमाम
रोती थीं थामे चोबे-अलम[8] ख़्वाहरे-इमाम
तेग़ें कमर में दोश[9] पे शिमले पड़े हुए
ज़ैनब के लाल ज़ेरे-अलम[10] आ खड़े हुए।
गह[11] माँ को देखते थे गहे जानिबे-अलम[12]
नारा कभी ये था कि निसारे-शहे-उमम

१. रसूल जो लिबास (पोशाक) पहनते थे वो लाओ २. मुसलमानों का विश्वास कि ख़ुदा ने हज़रत मुहम्मद को एक बार आसमान पर बुलाया था। यह उनकी पूर्णतः नबी होने की मंज़िल थी। इसे मेराज कहते हैं ३. हज़रत रसूल ४. जिस्म पर ५. हथियार ६. इज्ज़त एवं शान ने ख़ुद हाथ उठा कर दुआ पढ़ी यानी इज्ज़त बढ़ी ७. झण्डा जो एक लम्बी सी लकड़ी में लगा होता है ८. अलम की लकड़ी ९. कन्धे पर पगड़ी के पल्लू पड़े हुए १०. झण्डे के नीचे ११. कभी १२. अलम की रक़

करते थे दोनों भाई कभी मशवरे बहम[1]
आहिस्ता पूछते कभी माँ से वो जी हशम
क्या क़स्द[2] है अलीए वली के निशान का
अम्मा किसे मिलेगा अलम नाना जान का।
बे - मिस्ल थे रसूल के लश्कर के सब जवाँ
लेकिन हमारे जद[3] को नबी ने दिया निशाँ[4]
ख़ैबर[5] में देखता रहा मुँह लश्करे गराँ
पाया अलम अली ने मगर वक़्ते-इम्तिहाँ
ताक़त में कुछ कमी नहीं, गो भूके प्यासे हैं
पोते उन्हीं के हम हैं उन्हीं के नवासे हैं।
ज़ैनब ने तब कहा कि तुम्हें इससे क्या है काम
क्या दख़्ल[6] मुझको, मालिक-ने-मुख़्तार हैं इमाम
देखो न कीजो बे - अदबाना[7] कोई कलाम
बिगड़ूँगी मैं जो लोगे अलम का ज़ुबाँ से नाम
लो जाओ बस खड़े हो अलग हाथ जोड़ के
क्यों आये हो यहाँ अली अकबर को छोड़ के।
सरको, हटो, बढ़ो न खड़े हो अलम के पास
ऐसा न हो कि देख लें शाहे-फ़लक[8]-असास
खोते हो और आये हुए तुम मेरे हवास
बस क़ाबिले[9]-क़बूल नहीं है ये इलतमास[10]
रोने लगोगे तुम जो बुरा या भला कहूँ
इस ज़िद को बचपने के सिवा और क्या कहूँ।
इन नन्हे-नन्हे हाथों से उठ्ठेगा ये अलम
छोटे क़दों में सब से, सिनों में सभी से कम
निकलें तनों से सिब्ते[11]-नबी के क़दम पे दम
ओह्दा[12] यही है, बस यही मनसब, यही हशम
रुख़्सत तलब अगर हो तो ये मेरा काम है
माँ सदक़े जाये आज तो मरने में नाम है।

१. आपस में २. इरादा ३. दादा ४. झण्डा ५. ख़ैबर की लड़ाई रसूल के ज़माने की बहुत मशहूर लड़ाई थी जिसमें हज़रत अली की बहादुरी की धाक जम गयी थी। औन और मुहम्मद उनके नवासे थे ६. मेरा क्या दख़्ल है। इसके हुसैन ख़ुद-मुख़्तार हैं ७. बेअदबी की बात न करना ८. इमाम हुसैन ९. तुम्हारी यह बिनती मंज़ूर नहीं हो सकती १०. प्रार्थना ११. रसूल का नवासा १२. सबसे बड़ा ओहदा, शान और इज्ज़त बस इसी में है

नरग़े[1] में तीन दिन से है मुश्किल[2]-कुशा का लाल
अम्मा का बाग़ होता है जंगल में पाएमाल[3]
पूछा न ये कि खोले हैं क्यों तुमने सर के बाल
मैं लुट रही हूँ और तुम्हें मनसब का है ख्याल
ग़मख़्वार तुम मेरे हो न आशिक़ इमाम के
मालूम हो गया मुझे तालिब[4] हो नाम के।

हाथों को जोड़ - जोड़ के बोले वो लाला फ़ाम
ग़ुस्से को आप थाम लें ऐ ख़्वाहरे[5]-इमाम
वल्लाह क्या मजाल जो अब लें अलम का नाम
खुल जायेगा लड़ेंगे जो ये बा - वफ़ा ग़ुलाम
फ़ौजें भगा के गंजे-शहीदाँ[6] में सोयेंगे
तब क़द्र होगी आपको जब हम न होएँगे।

बस कह के ये हटे जो सआदत[7]-निशाँ पिसर
छाती भर आयी, माँ ने कहा थाम कर जिगर
देते हो अपने मरने की प्यारो मुझे खबर
ठहरो ज़रा बलाएँ तो ले ले ये नौहा गर
क्या सदक़े जाऊँ माँ की नसीहत बुरी लगी
बच्चो ये क्या कहा कि जिगर पर छुरी लगी।

ज़ैनब के पास आके ये बोले शहे-ज़मन[8]
क्यों तुमने दोनों बेटों की बातें सुनीं बहन
शेरों के शेर, आक़िल[9]-ो जर्रार-ो-सफ़ शिकन
ज़ैनब वहीदे-अस्र[10] हैं दोनों ये गुल - बदन
यूँ देखने को सब में बुज़ुर्गों के तौर हैं
तेवर ही उनके और इरादे ही और हैं।

नौ-दस बरस के सिन में ये जुरअत[11] ये वलवले[12]
बच्चे किसी ने देखे हैं ऐसे भी मनचले
इक़बाल क्योंकर उनके न क़दमों से मुँह मले
किस गोद में बड़े हुए किस दूध से पले

१. घेरे में २. इमाम हुसैन ३. बरबाद ४. ख्वाहिशमन्द, इच्छुक ५. इमाम की बहिन ६. शहीदों का ख़ज़ाना उसे कहते हैं जहाँ इमाम हुसैन के सब साथी दफ़्न हैं ७. नेक ८. इमाम हुसैन ९. अक़लमन्द, बहादुर १०. दुनिया में एक ही हैं ११-१२. जोश एवं हौसला

बेशक ये विर्सादारे[1] - जनाबे - अमीर हैं
पर क्या कहूँ कि दोनों की उमरें सग़ीर हैं।

बस जिस को तुम कहो उसे दें फ़ौज का अलम
की अर्ज़ जो सलाहे[2] - शहे[3] - आस्माँ - हशम
फ़रमाया जब से उठ गयीं ज़ोहराए-आकरम
उस दिन से तुम को माँ की जगह जानते हैं हम
मालिक हो तुम बुज़ुर्ग कोई हो कि ख़ुर्द[4] हो
जिसको कहो उसी को ये ओहदा सुपुर्द[5] हो।

बोलीं बहन कि आप भी तो लें किसी का नाम
है किस तरफ़ तवज्जए सरदारे[6]-खास-ो-आम
गर मुझसे पूछते हैं शहे आसमाँ-मक़ाम
क़ुर्आं के बाद है तो अली ही का कुछ कलाम
शौकत में, क़द में, शान में हमसर कोई नहीं
अब्बास नामदार से बहतर कोई नहीं।

आशिक़[7], ग़ुलाम, ख़ादिमे-दैरीना[8], जाँ निसार
फ़र्ज़न्द, भाई, ज़ीनते-पहलू, वफ़ा-शिआर
जर्रार[9] यादगारे-पिदर[10], फ़ख़रे[11]-रोज़गार
राहत[12]-रसाँ मुती-ओ - नमूदार-ो नामदार
सफ़दर है, शेर-दिल है, बहादुर है नेक है
बे-मिस्ल सैकड़ों में हज़ारों में एक है।

आँखों में अश्क भरके ये बोले शहे-ज़मन
हाँ थी यही अली की वसीयत भी ऐ बहन
अच्छा, बुलाएँ आप, किधर हैं वो सफ़[13]-शिकन
अकबर चचा के पास गये सुन के ये सुखन[14]
की अर्ज़ इन्तिज़ार है शाहे[15]-ग़यूर को
चलिये फुफी ने याद किया है हुज़ूर को।

अब्बास आये हाथों को जोड़े हुज़ूरे-शाह
जाओ बहन के पास, ये बोला दो दी[16]-पनाह
ज़ैनब वहीं अलम लिये आयीं, ब-इज़्ज़ो-जाह
बोले निशाँ को लेके शहे-अर्श-बार गाह

१. वारिस, उत्तराधिकारी २. सलाह, मशवरा ३. इमाम हुसैन ४. छोटा हो या बड़ा ५. यह ओहदा दिया जाये ६. इमाम हुसैन ७-८. ये सब अब्बास की ख़ूबियां (गुण) गिना रही हैं ९. बहादुर १०. बाप ११. संसार का गर्व १२. राहत देनेवाला, आज्ञा पालन करनेवाला, शानवाला १३. बहादुर १४. बात १५. इमाम हुसैन

उनकी ख़ुशी वो है जो रज़ा पंजतन[1] की है
लो भाई लो अलम, ये इनायत[2] बहन की है।
रखकर अलम पे हाथ, झुका वो फ़लक[3] वक़ार
हमशीर[4] के क़दम पे मला मुँह ब-इफ़्तख़ार
ज़ैनब बलाएँ ले के ये बोलीं कि मैं निसार
अब्बास फ़ात्मा की कमाई से होश्यार
हो जाये आज सुलह की सूरत तो कल चलो
इन आफ़तों से भाई को लेकर निकल चलो।
की अर्ज़ मेरे जिस्म पे जिस वक़्त तक है सर
मुम्किन नहीं है ये कि बढ़े फ़ौजे-बद गौहर
तेग़ें खिचें जो लाख तो सीना करूँ सिपर
देखें उठा के आँख, ये क्या ताब, क्या जिगर
सावन्त हैं पिसर, असदे जुलजलाल के
गर शेर हो तो फेंक दें आँखें निकालके।
मुँह करके सूए क़ब्रे-अली फिर किया ख़िताब
ज़र्रे को आज कर दिया मौला ने आफ़ताब
ये अर्ज़े-ख़ाकसार है बस या अबूतराब[5]
आक़ा के आगे मैं हूँ शहादत से कामयाब
सर तन से इब्ने-फ़ात्मा के रूबरू[6] गिरे
शब्बीर के पसीने पे मेरा लहू गिरे।
ये सुनके आयी ज़ौजए[7] - अब्बासे - नामवर
शौहर की सिम्त[8] पहले कनखियों से की नज़र
लीं सिब्ते-मुस्तुफ़ा की बलाएँ ब-चश्मे[9]-तर
ज़ैनब के गिर्द फिर के ये बोली वो नौहा गर
फ़ैज़[10] आप का है और तसद्दुक़[11] इमाम का
इज़्ज़त बढ़ी कनीज़ की, रुतबा[12] ग़ुलाम का।
सर को लगा के छाती से ज़ैनब ने ये कहा
तू अपनी माँग - कोख से ठण्डी रहे सदा
की अर्ज़ मुझ सी लाख कनीज़ें हों तो फ़िदा
बानूए - नामवर को सुहागन रखे ख़ुदा

१. हज़रत मुहम्मद, अली, फ़ात्मा, हसन और हुसैन को मिलाकर पंजतन कहते हैं २. मेहरबानी ३. आसमान की-सी इज़्ज़त वाला ४. बहिन ५. या अली ६. सामने ७. बीवी, पत्नी ८. तरफ़ ९. रोते हुए १०. आपकी इनायत, कृपा ११. हुसैन का सदक़ा यानी उनकी वजह से १२. शान

बच्चे जियें, तरक़्क़ीए-इक़बाल-ो-जाह हो
साये में आपके अली अकबर का ब्याह हो।
क़िस्मत वतन में ख़ैर से, फिर शह को लेके जाये
यसरब[1] में शोर हो कि सफ़र से हुसैन आये
उम्मुलनबीन[2] जाह-ो-हशम से पिसर को पाये
जल्दी शबे[3]-उरूसिए-अकबर ख़ुदा दिखाये
मेंहदी तुम्हारा लाल मले हाथ-पाँव में
लाओ दुल्हन को ब्याह के तारों की छाँव में।
नागाह[4] आके बाली सकीना ने ये कहा
कैसा है ये हजूम किधर हैं मेरे चचा
ओह्दा अलम का उन को मुबारक करे ख़ुदा
लोगो मुझे बलाएँ तो लेने दो एक ज़रा
शौकत ख़ुदा बढ़ाये मेरे अम्मू[5] जान की
मैं भी तो देखूँ शान[6] अली के निशान की।
अब्बास मुस्कुराके पुकारे कि आओ आओ
अम्मू निसार, प्यास से क्या हाल है बताओ
बोली लिपट के वो कि मेरी मश्क लेते जाओ
अब तो अलम मिला तुम्हें पानी मुझे पिलाओ
तोहफ़ा कोई न दीजे न इनआम दीजिये
क़ुर्बान जाऊँ पानी का एक जाम[7] दीजिये।
बातों पे उसकी रोती थीं सैदानियाँ तमाम
की अर्ज़ आके इब्ने[8] हसन ने कि या इमाम
अम्बोह[9] है, बढ़ी चली आती है फ़ौजे-शाम
फ़रमाया आपने कि नहीं फ़िक्र का मुक़ाम
अब्बास अब अलम लिये बाहर निकलते हैं
ठहरो बहन से मिल के गले हम भी चलते हैं।
ड्योढ़ी पे ख़ादमाने[10] - महल की हुई पुकार
आते हैं अब हुज़ूर, खबरदार, होशियार
ख़िलअत[11] पहन रहे हैं अलमदारे नामदार
नज़रें ख़ुशी की देने को हाज़िर हों जाँनिसार

१. मदीने के आसपास का इलाक़ा यसरब कहलाता है २. अब्बास की माँ का नाम जो इमाम हुसैन की सौतेली माँ थीं ३. शादी की रात ४. अचानक ५. चाचा ६. अब्बास ७. प्याला ८. हसन का बेटा यानी क़ासिम ९. हुजूम, भीड़ १०. महल के नौकर ११. ख़िलअत, पोशाक

भाई बड़ा है, सर पे तो साया है बाप का
ओहदा जवान बेटे ने पाया है बाप का।
नागाह बढ़े अलम लिये अब्बासे-बावफ़ा
दौड़े सब अहले-बैत खुले सर बरहना पा
हज़रत ने हाथ उठाके ये एक-एक से कहा
लो अलविदा[1] ऐ हरम पाके-मुस्तुफ़ा
सुबहे[2]-शबे-फ़िराक़ है प्यारों को देख लो
सब मिलके डूबते हुए तारों को देख लो।
शह के क़दम पे ज़ैनबे-ज़ारो-हज़ीं गिरी
बानो पछाड़ें खाके पिसर के क़रीं गिरी
कलसूम थरथरा के बरूए-ज़मीं गिरी
बाक़र कहीं गिरा तो सकीना कहीं गिरी
उजड़ा चमन, हर एक गुले[3]-ताज़ा निकल गया
निकला अलम कि घर से जनाज़ा निकल गया।
मौला[4] चढ़े फ़रस[5] पे मुहम्मद की शान से
तरकश लगाया हर ने, ये किस आन-बान से
निकला ये जिन्न[6]-ो-इन्स-ो-मलक की ज़ुबान से
उतरा है फिर ज़मीं पे बुराक़[7] आसमान से
सारा चलन ख़िराम में कुबके[8]-दरी का है
घूँघट नयी दुल्हन का है चेहरा परी का है।
नागाह तीर उधर से चले जानिबे-इमाम
घोड़ा बढ़ा के आपने हुज्जत[9] भी की तमाम
निकले इधर से शह के रफ़ीक़ाने[10]-तश्ना-काम
बे-सर हुए परों में सराने-सिपाहे[11]-शाम
बाला[12] कभी थी तेग़, कभी ज़ेरे-तंग थी
एक-एक की जंग मालिके-उश्तुर[13] की जंग थी।

१. रुख़सत, विदाई २. जुदाई की सुबह, वियोग की सुबह ३. तरो-ताज़ा फूल यानी नौजवान (नवयुवक) ४. इमाम हुसैन ५. घोड़ा ६. जिनों, इन्सानों और फ़रिश्तों की ज़ुबान से ७. स्वर्ग से आया घोड़ा (जो रसूल के लिए आया था) ८. अच्छी चाल वाले परिन्दे (पक्षी) ९. आख़िरी बार भी समझाने की कोशिश की १०. प्यासे दोस्त ११. शाम की फ़ौज के अफ़सर १२. तलवार बड़ी तेज़ी से कभी सिरों के ऊपर होती थी और कभी शरीर को चीरकर निकल जाती थी १३. हज़रत अली की फ़ौज के एक बहादुर सरदार का नाम

निकले पए - जिहाद[1] अज़ीज़ाने - शाहे-दीं
नारे किये कि ख़ौफ़ से हिलने लगी ज़मीं
रोबाह[2] की सफ़ों पे चले शेरे - ख़श्मगीं
खींची जो तेग़ भूल गये सफ़ - कशी[3] लईं
बिजली गिरी परों पे शुमाल[4]-ो-जुनूब के
क्या - क्या लड़े हैं शाम के बादल में डूब के।
अल्लाह रे अली के नवासों की कारज़ार[5]
दोनों के नीमचे थे कि चलती थी जुल्फ़िक़ार[6]
शाना कटा किसी ने जो रोका सिपर पे वार
गिनती थी ज़ख़्मियों की न कुश्तों[7] का कुछ शुमार
इतने सवार क़त्ल किये थोड़ी देर में
दोनों के घोड़े छुप गये लाशों के ढेर में।
किस हुस्न से हसन[8] का जवाने - हसीं लड़ा
घिर-घिर के सूरते - असदे ख़श्मगी[9] लड़ा
दो दिन की भूक-प्यास में वो मह - जबीं लड़ा
सेहरा उलट के[10] यूँ कोई दूल्हा नहीं लड़ा
हमले दिखा दिये असदे[11] - किरदिगार के
मक़तल में सोये अरज़क़े[12] - शामी को मार के।
चमकी जो तेग़े - हज़रते - अब्बासे - अर्श जाह
रूहुल अमीं[13] पुकारे कि अल्लाह की पनाह
ढालों में छुप गया पिसरे - साद रू स्याह
कुश्तों से बन्द हो गयी अम्न-ो-अमाँ की राह
झपटा जो शेर शौक़ में दरया की सैर के
ले ली तराई तेग़ों की मौजों में पैर के।
आफ़त थी हर्ब[14]-ो - ज़र्ब[15] - अली अकबरे-दिलेर
गुस्से में झपटे सैद[16] पे जैसे गुरिसना[17] शेर
सब सर[18] बुलन्द पस्त ज़बर्दस्त सब थे ज़ेर
जंगल में चार सिम्त हुए ज़ख़्मियों के ढेर

१. लड़ाई के लिए हुसैन के अज़ीज़ निकले २. ऐसा लगा जैसे लोमड़ियों पर गुस्से में भरे शेरों ने वार किया हो ३. दुश्मन सफ़ें बाँधना भूल गये ४. उत्तर, दक्षिण ५. लड़ाई ६. अली की तलवार का नाम ७. ज़ख़्मियों की गिनती न थी ८. क़ासिम ९. गुस्से में भरा हुआ शेर १०. हज़रत अली ११. दुश्मन के एक बहादुर सिपाही का नाम १२. जिब्राईल फ़रिश्ता १३-१४. लड़ाई और तलवार की काट १५. शिकार १६. भूखा शेर १७. वे सब जो सिर उठाये थे हार गये

सर उनके उतरे तन से जो थे रन चढ़े हुए
अब्बास से भी जंग में कुछ थे बढ़े हुए।
तलवारें बरसीं सुबह से निस्फ़ुन[1]नहार तक
हिलती रही ज़मीन लरज़ते रहे फ़लक[2]
काँपा किये परों को समेटे हुए मलक
नारे न फिर वो थे न वो तेग़ों की थी चमक
ढालों का दौर बर्छियों का औज हो गया
हंगामे[3] - ज़ोह्‌रे ख़ात्मए - फ़ौज हो गया।
लाशें सभों की सिब्ते - नबी ख़ुद उठा के लाये
क़ातिल किसी शहीद का सर काटने न पाये
दुश्मन को भी न दोस्त की फ़ुर्क़त[4] खुदा दिखाये
फ़रमाते थे बिछड़ गये सब हम से हाय हाय
इतने पहाड़ गिर पड़ें जिस पर वो ख़म[5] न हो
गर सौ बरस जियूँ तो ये मजमा[6] बहम न हो।
लाशें तो सब के गिर्द थीं, और बीच में इमाम
डूबी हुई थी ख़ूं में नबी की क़बा तमाम
अफ़सुर्द[7]-ओ - हज़ी-ओ-परेशान- ो - तश्ना - काम
बर्छी थी दिल को फ़तह के बाजों की धूमधाम
आदा किसी शहीद का जब नाम लेते थे
थर्रा के दोनों हाथों से दिल थाम लेते थे।
मक़तल से आये ख़ेमे के दर पर शहे - ज़मन
पर शिद्‌दते[8] - अतश से न थी ताक़ते[9] - सुख़न
पर्दे पे हाथ रख के पुकारे बसद[10] महन
असग़र को गाहवारे से ले आओ ऐ बहन
फिर एक बार इस महे[11] - अनवर को देख लें
अकबर के शीर[12]ख्वार बिरादर को देख लें।
ख़ेमे से दौड़ी आले - पयम्बर बरहना सर
असग़र को लायीं हाथों पे बानूए - नौहा गर
बच्चे को लेके बैठ गये आप ख़ाक पर
मुँह से मले जो होंट तो चौंका वो सीमबर[13]

१. दोपहर २. आसमान ३. ज़ोह्‌र (दोपहर की नमाज़ का समय) ज़ोह्‌र ४. जुदाई, वियोग ६. इकट्ठा न हो ७. मुसीबत के मारे, परेशान, प्यासे ८. प्यास की सख्ती से ९. बोलने की ताक़त १०. हज़ार रंज के साथ ११. सुन्दर बच्चे को १२. दूध पीने वाला १३. सुन्दर

ग़म की छुरी चली जिगरे - चाक-चाक पर
बिठला लिया हुसैन ने ज़ानूए पाक पर।
बच्चे से मुल्तफ़ित[1] थे शहे - आस्माँ[2] - सरीर
था इस तरफ़ कमीं[3] में बिने - काहिले - शरीर
मारा जो तीन फाल का उस बेहया ने तीर
बस दफ़अतन[4] निशाना हुई गर्दने - सग़ीर
तड़पा जो शीर - ख्वार तो हज़रत ने आह की
मासूम ज़ब्ह हो गया गोदी में शाह की।
जिस दम तड़प के मर गया वो तिफ़ले[5]-शीरख्वार
छोटी सी क़ब्र तेग़ से खोदी बहाले - ज़ार
बच्चे को दफ़न करके पुकारा वो ज़ी वक़ार
ऐ ख़ाके - पाक हुरमते[6] - मेहमाँ निगाहदार
दामन में रख इसे जो मोहब्बत अली की है
दौलत है फ़ात्मा की अमानत नबी की है।

१. सम्बोधित २. इमाम हुसैन ३. घात में ४. अचानक बच्चे की गर्दन निशाना बन गयी ५. बच्चा ६. ऐ पाक मिट्टी, मेहमान की इज्ज़त की रक्षा करना